पंच अणुव्रत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

श्रावक जिन व्रतों का यथाशक्ति पालन करता है वे अणुव्रत कहलाते हैं। अणु का अर्थ है छोटा या लघु और व्रत का अर्थ नियम है। दैनिक व्यवहार में आचरणीय जो छोटे–छोटे नियम हैं वे अणुव्रत कहलाते हैं। भारतीय संस्कृति व्रतों की संस्कृति है। यहां के निवासी प्रायः हर महीने कोई न कोई व्रत रखकर आत्मा को शुद्ध करते है। व्रत का मतलब होता है संकल्प। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पंचअणुव्रत हैं। प्रायः सभी धर्मों में इनका पालन किया जाता है। जैन धर्म का मूलाधार ही अहिंसा है। हिंसा कभी भी धर्म नहीं हो सकती। इस विराट् विश्व में जितने भी प्राणी हैं, वे चाहे छोटे हों या बड़े हों, पशु हों या मानव हों, सभी जीवित रहना चाहते हैं, कोई भी मरना नहीं चाहता। अहिंसा में सभी प्राणियों के कल्याण की भावना निहित है।

मनुष्य हिंसा क्यों करता है? हिंसा का कारण क्या है? हिंसा का प्रमुख कारण मानव का अज्ञान है। तत्त्व से अनभिज्ञ होने के कारण मनुष्य विषय, कषाय आदि मानसिक दोषों से पीड़ित है। इसलिए वह हिंसात्मक प्रवृत्ति करता है। भगवान् महावीर ने छह जीवनिकायों की प्ररूपणा की है। इनमें पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, वनस्पति और त्रस की प्ररूपणा की गयी है। जब तक जीव का ज्ञान नहीं होता, तब तक हिंसा से छुटकारा नहीं मिल सकता। जो श्रावक धर्म का पालक है अथवा अपनी शक्ति के अनुसार उसके एक देश का पालक है वह देशसंयमी है।

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांच स्थूल पापों के त्याग को अणुव्रत कहा है। दो करण तीन योग से स्थूल हिंसा आदि दोषों के त्याग अणुव्रत है। दो करण से तात्पर्य न स्वयं करना न करवाना और तीन योग से तात्पर्य मन, वचन और काय से है। जैन धर्म का मूल अहिंसा है। श्रमण और श्रावक की अहिंसा में अन्तर है। श्रमण किसी पर हिंसात्मक नियन्त्रण नहीं करता। वह अपराधी को भी स्नेह से उपदेश देता है। वह उसे किसी भी प्रकार कष्ट नहीं

देता। किन्तु श्रावक के लिए यह नियम नहीं है। वह अपराधी को दण्ड भी दे सकता है, किन्तु दण्ड देते समय वह प्रतिकार की भावना नहीं रखता। वह दण्ड देकर अपराधी को सुधारने का लक्ष्य रखता है। श्रमण की सर्वहिंसाविरति की तुलना में श्रावक की अहिंसा देशविरति है। श्रमण मन, वचन और काया से किसी भी प्राणी की, चाहे व त्रस हो, चाहे वह स्थावर हो, न स्वयं हिंसा करता है, न करवाता है और न करनेवाले का अनुमोदन ही करता है। विवेकपूर्वक पूर्ण सावधानी रखने पर भी यदि किसी प्राणी की हिंसा हो जाय तो श्रावक के अहिंसा व्रत का भंग नहीं होता। श्रमणोपासक संकल्प से जीवनभर के लिये प्राणातिपात का त्याग करता है, किन्तु आरम्भ से नहीं। मारने की भावना से किसी निर्दोष त्रस प्राणी की बिना प्रयोजन के हिंसा करना संकल्पजा हिंसा है। गृह निर्माण करने में पृथ्वी खोदने मे, खेत–जोतने आदि आरम्भ के कार्यों में त्रस जीवों की हिंसा हो जाना आरम्भजा हिंसा है। आरम्भजा हिंसा में हिंसा का संकल्प नहीं होता।

वह वचन जिससे प्राणियों को पीड़ा पहुंचती हो, चाहे वह सच हो या झूठ, असत्य कहलाता है। श्रावक यथाशक्ति सत्य धर्म का पालन करता है। अणुव्रत के रूप में सत्य की गणना की गयी है। जैसा हुआ है, वैसा ही कहना सत्य का सामान्य लक्षण है, परन्तु अध्यात्म मार्ग में स्व पर अहिंसा की प्रधानता होने से हित व मित वचन को सत्य कहा जाता है। 'सत्य' पद अनेकार्थी है–सत्, सद्भाव, तत्त्व, तथ्य, सार्वभौमनियम, भूतोद्भावन संयम, काय, भाव और भाषा की ऋजुता तथा अविसंवादन योग, यथार्थवचन, अगर्हितवचन, व्यवहाराश्रित वचन और प्रतिज्ञा ये सत्य के अर्थ हैं।

श्रावक स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत स्वीकार करता है। अदत्तादान को ही चोरी कहा जाता है, जिसका सामान्य अर्थ बिना दी हुई वस्तु को लेने से है। अदत्तादानं स्तेयम् अर्थात् कहकर बिना दी हुई वस्तु को लेने को चोरी कहा है। श्रावक जीवनभर के लिए दो करण और तीन योग से स्थूल चोरी का परित्याग करता हैं, अर्थात् वह मन, वचन और काय से न स्थूल चोरी करता है और न करवाता है।

मोक्षमार्ग के आराधक को ब्रह्मचर्य की साधना आवश्यक बतायी गयी है। श्रमणपूर्णरूप से ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, किन्तु गृहस्थाश्रम में रहकर श्रावक के लिये पूर्ण ब्रह्मचर्य का

पालन करना अत्यन्त कठिन है। गृहस्थाश्रम का लक्ष्य वासना पूर्ति करना नहीं, वरन् ब्रह्मचर्य के उच्चादर्श को प्राप्त करना है। पत्नी भोग की वस्तु नहीं वरन् धर्म सहायिका है। इसीलिए आगमों में उसके लिए धम्मसहाय्या, धर्मपत्नी, सहचारिणी आदि विशेषण प्रयुक्त हुए है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से मैथुन सेवन वर्जित बताया गया है।

परिग्रह सभी प्रकार के विवादों की जड़ है, विषमता का कारण है। इसीलिए श्रावक के लिए परिग्रह परिमाणव्रत का विधान किया गया है। श्रावक जो कुछ भी संग्रह करता है, वह केवल आवश्यकता की पूर्ति के लिए करता है। श्रावक की इस परिग्रहवृत्ति को स्थूल परिग्रहविरमण व्रत कहा है। परिग्रहपरिमाणव्रत में श्रावक आवश्यक वस्तुओं की मर्यादा कर शेष समस्त वस्तुओं के ग्रहण व संग्रह का त्याग करता है।